मैक ने बनाई फिल्में

लेखन व चित्रः डॉन ब्राउन, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

1900 में मैक सैन्नेट, न्यू यॉर्क के एक मंच पर एक बर्लैस्क (तमाशा) में घोड़े के पिछवाड़े की भूमिका अदा किया करते थे। पंद्रह ही वर्ष बाद वे फिल्म निर्माता बन चुके थे, जिनका अपना स्टूडियो था, और उनके तहत एक हज़ार लोग काम करते थे। उन्होंने कई स्मरणीय कॉमेडी (हास्य) फिल्में बनाईं थीं।

यह सचित्र पुस्तक, थियेटर बोर्डिंग हाउस में रहते और न्यू यॉर्क के मंचों पर नगण्य भूमिकाएं अदा करने से लेकर चलचित्रों के नए उद्योग में काम पाने और अंततः सफलता पाने तक की मैक के जीवन की कहानी को पेश करती है। फिल्मों की दुनिया में भी मैक को प्रेरणा तमाशे में काम करने के दौरान सीखी 'स्लैपस्टिक' कॉमेडी (फूहड़ हास्य-विनोद) से ही मिली। नतीजतन उन्होंने ऐसी फिल्में बनाईं जो मूक फिल्मों के युग को ही परिभाषित करती हैं। मैक ने न केवल 'कीस्टोन कॉप' की रचना की बल्कि दुनिया का परिचय तब तक अज्ञात ब्रिटिश अभिनेता चार्ली चैपलिन से भी करवाया। इसके अलावा चेहरे पर पाई फेंकने/पोतने के आज तक प्रचलित सदाबहार मज़ाक को मैक ने ही पहली बार फिल्माया।

1916 तक, घोड़े का वह पिछवाड़ा 'किंग ऑफ कॉमेडी (हास्य-विनोद का बादशाह) बन चुका था। डॉन ब्राउन का संयमित गद्य और उनके सटीक चित्र मैक सैन्नेट की इस यात्रा को बखूबी पेश करते हैं।

मैक ने बनाई फिल्में

लेखन व चित्रः डॉन ब्राउन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

केथी और मैक के लिए

1900 में मैक सैन्नेट, एक घोड़े का पिछला हिस्सा थे।

मैनहैटन के एक फटेहाल मंच पर खेले जाने वाले एक बेवकूफी भरे प्रहसन में यह एक अदना-सी भूमिका थी। पर मैक का सपना था 'शो बिज़नेस' में एक बड़ा सितारा बनने का।

क्या उनके अति-साधारण और मशक्कत भरी ज़िन्दगी ने उन्हें कुछ अलग और मनमोहक करने को प्रेरित किया था? दरअसल मैक कनाडा के एक खेत में पले-बढ़े थे। किशोरावस्था से उन्होंने लोहा कारखाने में पिघलाई धातु को ढालने का काम किया था। सो एक घोड़े का पिछवाड़ा बनना उनके सपने को साकार करने की दिशा में एक कदम तो था ही।

और जैसा उस अभिनेता ने कहा था, जो घोड़े का अगला हिस्सा बना करता था, "पिछले पैर ही सारा अभिनय करते हैं और सारी वाह-वाही भी उन्हें ही मिलती है!"
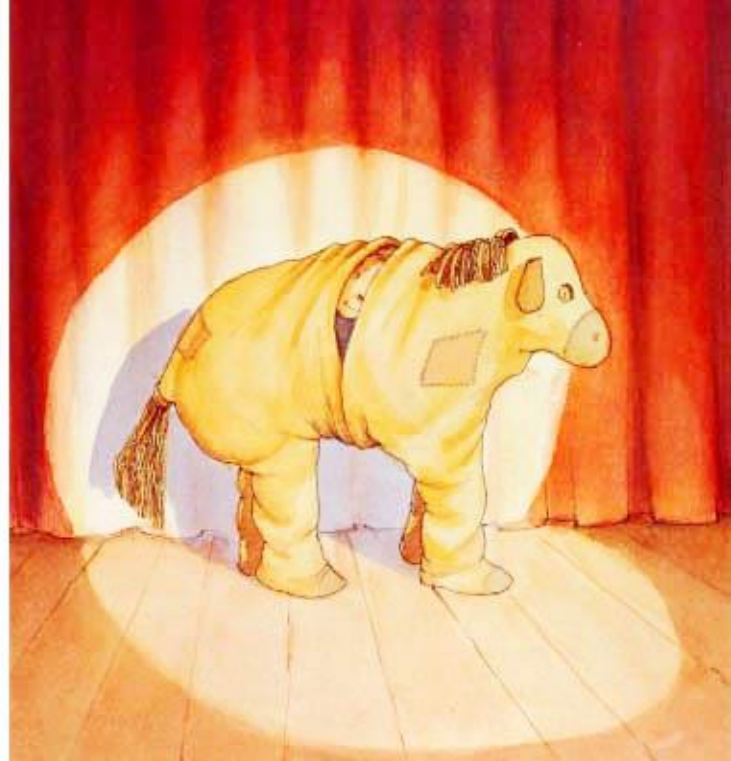
इसी वाह-वाही की तलाश में मैक ने तमाशों में अभिनय किया, भौंडा मसखरापन किया, चार या तीन की टोलियों में गीत गाए, मंच सज्जा का सामान ढ़ोया।

बाद में जब उन्होंने एक म्यूज़िकल (गीत-नाटक) में काम पाने की कोशिश की, उनसे कहा गया कि वे अपने नाचने के कौशल को दर्शाएं। कुछ बेढ़ब कदम उठाने के बाद नाटक के मुख्य सितारे ने कहा, ‘‘इस नौसिखिए को दफ़ा करो!’’

दर्शक भी बेरहम हो सकते थे।

तमाम निराशाओं के बावजूद मैक ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने 'स्लैपस्टिक' (हास्य-विनोद की तमाशे की शैली) सीखी - किसीको लतियाना, केले के छिलके पर फिसल जाना - जो एक किस्म का शारीरिक हास्य-विनोद था। इसमें पगलाई हुई कलाबाज़ियाँ, लुढ़कने-रपटने की बेवकूफ़ी भरी हरकतें शामिल थीं। इन प्रहसनों में सब कुछ गड़बड़ाता और इस कदर बेकाबू हो जाता था कि तहलका मच जाए।

दर्शकों को यह सब बेहद पसन्द आता था। और मैक को भी।

उन्होंने कई बड़े शहरों में प्रदर्शन किए, न्यू यॉर्क, शिकागो, और बॉस्टन में। पर उनकी भूमिकाएं हमेशा छोटी रहीं और वे जिस सफलता को तलाश रहे थे उससे कोसों दूर।

अपने कामों के बीच मैक पाँच सेंट के भोजन और सस्ते आवासों में किराए के कमरों में रहा करते थे, जहाँ उनकी तरह के निचले स्तर के मनोरंजन व्यवसाय में काम तलाशने वाले अन्य उम्मीदवार रहा करते थे। “बौने, मोटी औरतें, टैप नर्तक, कार्निवाल (मनोरंजन मेला) व्यवसायी, बेरोज़गार संपेरे।” उनकी चिन्तित माँ ने युवा मैक को बीस डॉलर भिजवाए।

पर जो इन्सान घोड़े का पिछवाड़ा तक बनने को तैयार हो, वह आसानी से घुटने नहीं टेकता। मैक ने तय किया कि वे फिल्मों के नए उद्योग में अपनी किस्मत आजमाएंगे।

चलचित्र उन दिनों की नई सनसनी थे। 1892 में मशहूर आविष्कारक थॉमस एडिसन ने काइनैटोस्कोप बना डाला था। पाँच सेंट का सिक्का डालने पर यह बक्सेनुमा यंत्र एक छोटी-सी फिल्म दिखाता था, जिसे बक्से के अन्दर झाँकने वाले छेद से देखा जा सकता था। शुरुआती चलचित्रों में न तो कोई कहानी होती थी, न ही अभिनयः पहली फिल्म में बस एक आदमी को छींकते हुए दिखाया गया था! इन शुरुआती फिल्मों में कोई आवाज़ नहीं थी। अगले तकरीबन तीस सालों तक वे मूक ही रहीं। इसके बावजूद लोग उनसे रोमांचित थे, क्योंकि वे जीवन्त जो थीं।

1896 में फिल्में काइनैटोस्कोप से निकलीं और उन्हें परदे पर दिखाया जाने लगा। इसके साथ ही अमरीका भर में मूवी थियेटर बन गए। इन थियेटर्स को 'निकलोडियन' कहा जाने लगा, क्योंकि उनमें घुसने का शुल्क एक निकल यानी पाँच सेंट था, और ग्रीक भाषा में थियेटर को ओडियन कहते हैं। 1909 में तकरीबन तीस लाख लोग हर दिन 'निकलोडियनों' में जाया करते थे।

शुरुआती कैमरे हाथों से घुमा कर चलाए जाते थे।

शुरुआती फिल्में श्वेत-श्याम होती थीं। 1950 के दशक तक रंगीन फिल्मों का प्रचलन नहीं हुआ था।

कैमरा किसी 'एक्शन' को स्थिर चित्रों की एक श्रृंखला के रूप में कैद करता था। इन स्थिर चित्रों को तेज़ी से एक के बाद एक दिखाने पर गति का आभास होता था।

निकलोडियनों से नई फिल्मों की मांग आने लगी। सो हर किस्म के असंभव लोग - कारखानों के संचालक, साइकिल मरम्मत करने वालों से लेकर चोंगे और सूट बनाने वाले तक - फिल्म बनाने के धंधे से जुड़ने लपके। अपने परिवार का घोड़े को बेचने से मिली राशि से वॉर्नर बंधुओं ने दुनिया की पहली बड़ी फिल्म कम्पनी बनाई। कार्ल लैमली ने कपड़े बेचना बन्द किया और फिल्में बनाना शुरु किया और वे युनिवर्सल पिक्चर्स के मालिक बने।

17 जनवरी 1909 को, अपनी उन्नतीसवीं सालगिरह के दिन मैक को, बायोग्राफ मूवी कम्पनी में काम मिला। उन्होंने खुद को फिल्में बनाना सीखने में झोंक दिया। शुरुआत में उन्होंने कैमरे ढ़ोए, सीनरी (दृश्य सज्जा) लगाई-हटाई, फिल्मों की पटकथा लिखी और निर्देशन किया।

पर फिल्में बनाना भी मैक के लिए उतना ही कठिन सिद्ध हुआ जितना कभी नाचना सीखना लगा था। उन दिनों कैमरा हाथ से घुमा कर चलाए जाते थे। अगर आप उसे बहुत धीरे घुमाते तो लगता कि अभिनेता कंगारू जैसे उछल रहे हैं। और अगर आप उसे ज़्यादा तेज़ी से घुमाते, तो लगता मानों सब कुछ धीमी गति से रेंग रहा है। साथ ही ये आरंभिक फिल्में मुफ्त में मिलने वाली सूरज की रोशनी में फिल्माई जाती थीं। मतलब बरसात और बादल काम को रोक देते थे।

मैक ने ध्यान से फिल्में बनाने की कला सीखी। तब उन्हें अपने तमाशे के मंच के दिनों की याद आई और एक रोचक ख़याल सूझा। उन्होंने सोचा कि फिल्म के दर्शकों को भी ‘स्लैपस्टिक’ (बचकाना हास्य-विनोद) उतना ही पसन्द आएगा जितना नाटक देखने वालों को आता था। मैक को पक्का विश्वास था कि उनका कयास सही है। पर बायोग्राफ मूवी कम्पनी के संचालकों की रुचि रोमांस व नाटकीय फिल्मों में थी।

मैक ने तय किया कि वे भी अन्य फिल्म निर्माताओं की तरह दक्षिणी कैलिफोर्निया जाएंगे। वहाँ भरपूर धूप और साफ़ आसमान था, जिसकी ज़रूरत फिल्में बनाने में पड़ती थी। मैक ने अपना स्टूडियो एक नींबू और संतरों के फलबागान में बनाया, जो हॉलीवुड कहलाता था। उन्होंने अपनी कम्पनी को कीस्टोन पिक्चर्स का नाम दिया।
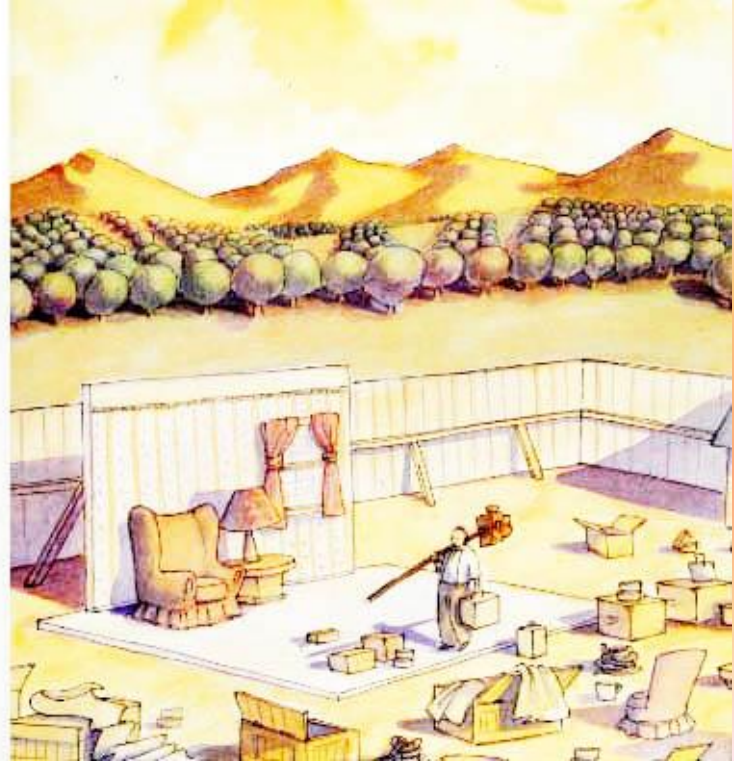
कैलिफोर्निया में अपने पहले साल में मैक ने 140 फिल्में बनाईं। ये सभी बेवकूफ़ी भरी हरकतों, हंसी-मज़ाक और ठहाकों वाली फिल्में थीं, जिनमें लोग ...

.....पलास्तर से भरे टबों में गिरते,

अपनी पतलूनों पर शोरबा गिराते,

ढ़हते फर्नीचरों से टकराते,

परदे पर फिसलते, लुढ़कते, गिरते, टकराते, झुकते, गुलामाटी खाते नज़र आते।

देखने में यह सब बड़ा ख़तरनाक लगता, पर मैक ओर उनके अभिनेता एहतियात बरतते थे सो बुरी चोटें बिरले ही लगती थीं।

उनकी फिल्मों में अभिनेता डंडों से लटकते,

सीढ़ियों से लुढ़क नीचे आ गिरते,

बाढ़ में बहते हुए हाथ-पैर मारते,
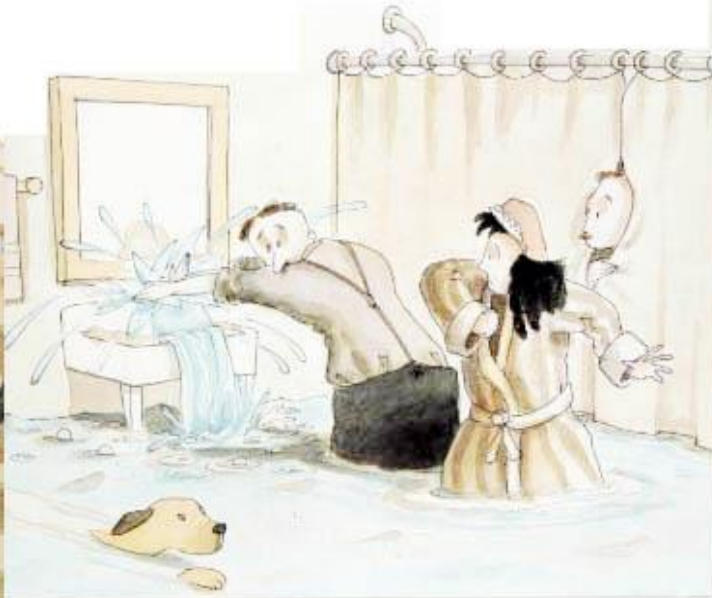
और भागते-दौड़ते किसीका पीछा करते। लोग जो दूसरे लोगों को पीछा कर रहे हों, लोग जो गाड़ियों का पीछा कर रहे हों, लोग जो किसी कुत्ते के पीछे भाग रहे हों, या कुत्ते जो लोगों का पीछा कर रहे हों - यानी कुछ भी, बशर्ते वह अजीबो-ग़रीब ओर मज़ेदार लगे।

कुछ ही समय में कीस्टोन में मैक के तहत एक हज़ार लोग काम करने लगे थे। वे अपने स्टूडियों को 'फन फैक्ट्री- (मस्ती का कारखाना) कहते थे। पगलाई गति से फिल्मों का निर्माण करने वाला यह कारखाना था भी किसी पागलखाने-सा। तो फिर मैक अपने कैमरामैनों, बढ़इयों, लेखकों, मंच सज्जा करने वालों, मेकअप करने वालों आदि पर नज़र कैसे रखते थे? वे अपने हास्य कलाकारों की निगहबानी कैसे करते थे, जिन्हें वे ''चाँदनी में मन्दबुद्धि ख़रगोशों-से'' कहा करते थे?

मैक ने अपने स्टूडियो में फिल्म बनाने वाली जगह के बीचोंबीच एक टावर बनवाया। उसमें ठेठ ऊपर अपना दफ्तर बनाया, जिसमें ढ़ेरों खिड़कियाँ थीं और था एक ... विशाल टब!

मैक ने कीस्टोन कॉप्स की परिकल्पना की, जो बेढ़ब पुलिस वालों का एक समूह था। ये पुलिसवाले ठसाठस भरे पुलिस वाहन में हमेशा किसी न किसी मुजरिम का पीछा किया करते थे। मैक को पुलिस वाहन को चकरघिन्नी खाते फिल्माना पसन्द था, जिसमें से पुलिस वाले यों टपका करते थे मानो कोई गीला कुत्ता अपने शरीर से पानी झटक रहा हो।

वे मैक ही थे जिन्होंने मेबल नार्मण्ड को बैन टर्पिन के चेहरे पर पहला पाई फेंकते फिल्माया था। इस बेवकूफी भरी हरकत का आज तक टीवी और फिल्मों में उपयोग होता है।

मैक ने एक अज्ञात इंग्लिश मसखरे चार्ली चैपलिन को काम पर रखा, जिसे फिल्मों में काम करने का कोई अनुभव नहीं था। चैपलिन जल्द ही फिल्मों में अभिनय करने में दक्ष हो गए। उनकी फिल्में लोगों को हंसाने के साथ उदास भी करती थीं। मैक के स्टूडियो में ही चैपलिन के एक मशहूर किरदार 'ट्रैम्प' की रचना हुई, जो एक आवारा भिखारी था। ट्रैम्प के रूप में चैपलिन एक बेहतरीन मसखरे बने, जिन्हें हमेशा याद रखा जाएगा।

लोग कहने लगे कि मैक के मसखरों जैसे हास्य कलाकार पहले कभी परदे पर देखे ही नहीं गए थे। मैक के मशहूर स्लैपस्टिक मसखरों में - कीस्टोन कॉप्स, चार्ली चैपलिन, फैटी आरबकल, मेबल नार्मण्ड, बैन टर्पिन, आदि शामिल थे। ये सभी कलाकार राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, और राजाओं से भी अधिक मशहूर थे।

1916 तक प्रतिदिन 2.5 करोड़ लोग फिल्में देखने जाने लगे थे। और मैक की मज़ेदार हास्य फिल्में, जो अजीबो-ग़रीब से असंभव के बीच डगमगाती थीं, हर जगह के दर्शकों में लोकप्रिय थीं। मैंक ने खुद को 'कॉमेडी किंग' यानी हास्य-विनोद का बादशाह कहना शुरु कर दिया। और उनके इस दावे से कोई असहमत भी नहीं था!

घोड़े के पिछवाड़े ने खूब वाह-वाही लूटी!
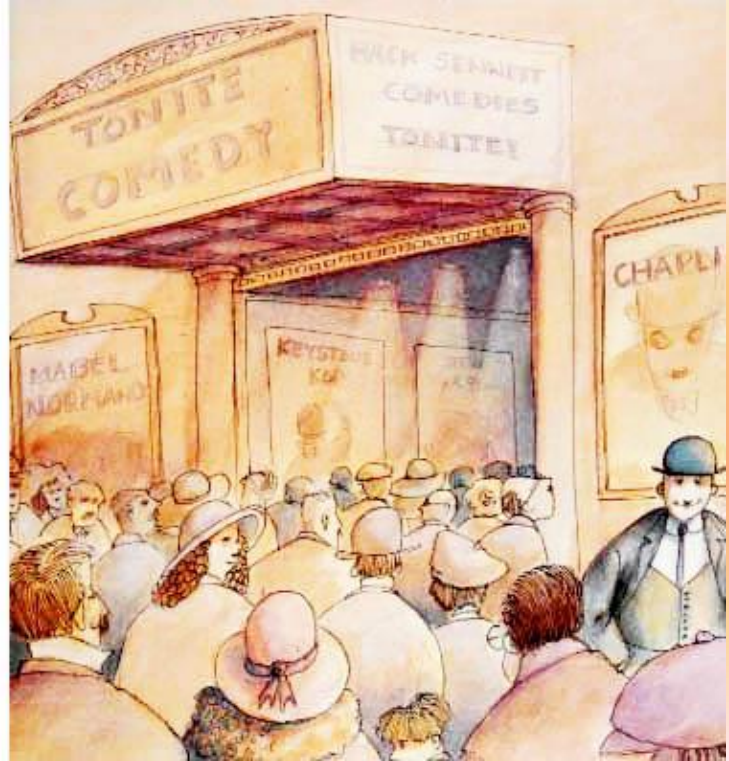
लेखक की कलम से

मैक सैन्नेट का जन्म 17 जनवरी 1880 में रिचमण्ड, कनाडा में हुआ था। बाद में उनका परिवार नॉर्थहैम्पटन, मैसाच्युसैटस् चला आया। किशोर होने पर मैक न्यू इंग्लैण्ड के एक लोहे के कारखाने में मज़दूरी करने लगे। पर कुछ कारणों से, जिन्हें मैक भी समझा नहीं सकते थे, वे एक ओपरा गायक बनने का सपना देखने लगे थे। अपने शहर के एक वकील कैल्विन कूलिज से, जो अमरीका के भावी राष्ट्रपति थे, सलाह-मशविरे के बाद मैक अपना भविष्य बनाने न्यू यॉर्क शहर चले गए। पर ओपरा गायक बनने का उनका सपना तब टूट गया जब उन्हें पता चला कि इसके लिए न केवल सालों प्रशिक्षण लेना पड़ता है, बल्की तब भी सफलता की कोई गारंटी नहीं होती। सो मैक ने तब बर्लेस्क (तमाशा) का रुख किया, जो एक किस्म के फूहड़ मनोरंजन का ज़रिया था, जो सामान्य लोगों में बेहद लोकप्रिय था। मैक ने वहाँ मंच-सहायक के रूप में काम शुरु किया। एक रात जब एक अभिनेता अचानक गैरहाज़िर हुआ, मैक को उसकी जगह लेने को कहा गया। इस आकस्मिक मौके से मंच पर मैक एक मामूली गायक व हास्य कलाकार के रूप में काम शुरू कर सके। पर मंच पर सफल हो नाम कमाने की कोई उम्मीद न देख मैक ने फिल्मों के नए क्षेत्र को चुना।

उन दिनों हर जगह 'निकलोडियन' थियेटर खुलने लगे थे, और उनमें लगातार नई फिल्मों की ज़बरदस्त मांग थी। न्यू यॉर्क शहर में नए फिल्म निर्माता कुकुरमुत्तों से उभर रहे थे। अंशतः इसलिए क्योंकि न्यू यॉर्क थॉमस एडिसन के न्यू जर्सी स्थित प्रयोगशाल के करीब था। हालांकि एडिसन ने चलचित्रों का आविष्कार नहीं किया था, उन्होंने इस तकनीक का पेटेन्ट हासिल कर लिया था। सो मूवी कैमरा उनसे ही किराए पर लिए जा सकते थे। 1909 में मैक बायोग्राफ पिक्चर्स से जुड़े और उसके निर्देशक डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ से मिले जो फिल्मों के ज़रिए कहानी कहने की विधा के अगुआ थे। साल भर बाद ही मैक ने फिल्मों का निर्देशन शुरू कर दिया और उन्हें अपनी 'स्लैपस्टिक कॉमेडी' के उत्साही दर्शक भी मिले। कुछ ही समय में वे उतने ही सफल हो गए जितने ग्रिफिथ थे, पर बायोग्राफ ने हास्य-विनोद को तवज्जो नहीं दी। सो जब अपनी एक स्वतंत्र फिल्म कम्पनी बनाने का प्रस्ताव सामने आया मैक ने मौका बखुशी स्वीकार लिया।

1912 में मैक ने कीस्टोन पिक्चर्स की स्थापना की और न्यू यॉर्क से दक्षिणी कैलिफोर्निया चले गए, जहाँ कई फिल्म निर्माता जा बसे थे। कैलिफोर्निया का मौसम अनुकूल था और ज़मीन सस्ती। ये दोनों ही चीज़ें फिल्म स्टूडियो के लिए बेहद महत्वपूर्ण थीं।

एक और बड़ा प्रलोभन यह भी था कि वहाँ वे एडिसन के पेटेन्टों की सख़्त अनुपालना से भी बच सकते थे।

मैक सैन्नेट की हास्य फिल्में मशहूर हो चलीं। उनकी कॉमिक टाइमिंग (सटीक समय) अचूक थी और वे कलाकारों में छिपे हुनर को पहचान लेते थे। उनकी फिल्मों की गर्दन तोड़ गति दर्शकों को भाती थी। उन्होंने मेबल नार्मण्ड, फैटी आरबकल, बैन टर्पिन, ग्लोरिया स्वैनसन, डब्ल्यू.सी. फील्डस् व कैरल लोम्बार्ड जैसे हास्य अभिनेताओं को खोज निकाला था। 1914 में मैक ने चार्ली चैपलिन को पेश किया, जो आज भी दुनिया के श्रेष्ठतम हास्य अभिनेता माने जाते हैं। मैक के स्टूडियो में ही 'पाई-इन-द-फेस' के सार्वकालिक मज़ाकिया हरकत को ईजाद किया गया।

1915 में मैक ने कीस्टोन के अपने साझेदारों के हिस्से ख़रीद लिए और स्टूडियो का नाम मैक सैन्नेट स्टूडियो रख दिया। पर आरंभिक फिल्म उद्योग जोखिमों से भी भरा था। 1935 में स्टूडियो का दिवाला निकल गया। मैक ने अपना शेष जीवन सेवा निवृत्ति में बिताया। 1960 में उनकी मृत्यु हो गई।